ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

आचार्य महाप्रज्ञ की कहानियों में जन चेतना की दृष्टि

प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी[1], अभिषेक चारण[2]

[1]निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय), लाडनूं-341306 (राजस्थान)।
[2]सहायक आचार्य, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय, जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय), लाडनूं-341306 (राजस्थान)।

आलेख सार

आचार्य महाप्रज्ञजी का सृजनात्मक रचना लेखन जिन परिस्थितियों में आरंभ हुआ उसका उद्देश्य तमाम तरह के विभेदों को मिटाकर समतामूलक समाज की स्थापना करना था। तात्कालिक समाज छूआछूत और ऊंच-नीच जैसी तमाम बुराईयों से ग्रस्त था। इन बुराईयों से मुक्ति हेतु एक जागरूक रचना लेखन एवं सच्चे कहानीकार धर्म की आवश्यकता थी ताकि सामुदायिक संरचना में समूल परिवर्तन लाया जा सके।

महाप्रज्ञजी ने तमाम जैन संतों को साथ लेकरकथा साहित्य के माध्यम से एक स्वर में न केवल खोखले कर्मकाण्डों और धर्म की आड़ में जारी पाखण्डों का विरोध किया अपितु समाज को नई दशा और दिशा दी। अपनी कहानियों में उन्होंने वर्ग भेद और वर्ण भेद की मानसिकता में जकड़े समाज को सौहार्द और सहिष्णुता से परिपूर्ण एक नवीन जीवन दृष्टि दी। एक ऐसी जीवन दृष्टि जिसमेंम्लैच्छ और विधर्मियों तक के लिए अहिंसा एवं सत्कर्म का मार्ग प्रस्तुत किया गया।

कुल मिलाकर महाप्रज्ञजी का समूचा कथा संसार ना केवल भारतीय धर्म और समाज बल्कि समग्र सृष्टि के लिए जनचेतना की दृष्टि लेकर आया। धर्म के नाम पर चली आ रही वर्षों पुरानी भ्रांत धारणाओं के स्थान पर युगानुकूल और तर्क सम्मत अवधारणाओं की स्थापना इनकी महानतम उपलब्धियों में से है।

मुख्य शब्दावली: रूखसार (चेहरा), प्रभावोत्पादक (प्रभाव उत्पन्न करने वाला), गागर में सागर (सीमित शब्दावली में बहुत गहरे भावों की अभिव्यक्ति), चरैवैति-चरैवैति (निरन्तरचलते रहो, चलते रहो), सरसता (रसयुक्त), यथार्थता (वास्तविकता)।

Copyright©authors

ISSN 2277-2359
Vol-11-Issue-12
December- 2019

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के इतिहास की ओर दृष्टिपात करें तो पायेंगे कि इस लम्बीसाहित्यिक परम्परा को विस्तार से व्याख्यायित करने के लिए इतिहास लेखकों ने इसे चार काल खण्डों में सर्वमान्य रूप से विभाजित किया जिन्हें आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल एवं आधुनिकाल के नामों से जाना गया। इस इतिहास परम्परा के प्रथम विभाजन आदिकाल में ही जैन कवियों की साहित्य परम्परा के दर्शन हो जाते है। आदिकालीन धार्मिक साहित्य में सिद्ध नाथ एवं जैन साहित्य का बोलबाला रहा और इन सब में भी जैन साहित्य को सर्वाधिक प्रामाणिक माना गया है। क्योंकि जैन कवियों की दुर्लभ लेखनी आज भी पुस्तकाकार रूप में सुरक्षित मिलती है। हिन्दी के जाने माने आलोचक डॉ. रामकुमार वर्मा ने तो हिन्दी के पहले कवि के रूप में भी जैन कवि स्वयंभू को स्वीकारा है जिनका समय 643 ई. में ठहरता है। इनके बाद यह परम्परा जैन कवि पुष्पदन्त से होकर आगे बढ़ी। जैन काव्यों का प्रमुख रस शांत रहा है, क्योंकि अहिंसा एवं नैतिकता इनके रक्त संस्कारों का अभिन्न अंग रही है।

आधुनिक युग की 20वीं सदी में भी जिन व्यक्तित्वों ने जैन कवियांे की इस समृद्ध साहित्यिक परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखने का जो महनीय उपक्रम किया है उनमें आचार्य तुलसी एवं उनके महान दार्शनिक शिष्य आचार्य महाप्रज्ञ का विशेष अवदान रहा है।

तेरापंथ धर्मसंघ वर्तमान में एक प्रबुद्ध एवं समृद्ध धर्मसंघ के रूप में प्रतिष्ठित है। एक तरफ जहां अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी के कुशल नैतृत्व में इस धर्मसंघ ने अत्यन्त विकास किया वहीं आचार्य महाप्रज्ञ की प्रेक्षा दृष्टि, व्युत्पन्नमती और आध्यात्मिक व्यक्तित्व से इस धर्मसंघ को आश्चर्यजनक गुणात्मक विस्तार मिला। महाप्रज्ञ की विलक्षण प्रतिभा और जागृत प्रज्ञा का आभास कर प्रसंगवश कभी आचार्यश्री तुलसी ने युवाचार्य महाप्रज्ञ के बारे में यहाँ तक कहा था कि युवाचार्य संघ के लिए उतने ही मान्य और सम्माननीय हैं जितने कि आचार्य हैं। जिसने भी आचार्य महाप्रज्ञ को निकट से देखा उन्हें इस कथन के बारे में किसी प्रमाण की अपेक्षा महसूस नहीं हुई। ऋजुता, सरलता की प्रतिमूर्ति अक्लान्त दार्शनिक विभूति महाप्रज्ञ का नथमलिज्म (महाप्रज्ञवाद) भी गांधीवाद की तरह लोकप्रिय हुआ। प्रदर्शन एवं प्रचार से अछूते, कर्मशील व्यक्तित्व के धनी आचार्य महाप्रज्ञ चरैवेति-चरैवेति में ही विश्वास करते थे।

आचार्य महाप्रज्ञ और कहानी विधा

साहित्य को सदैव समाज का दर्पण कहा जाता रहा है और दर्पण में अपार संभावनाओं को उकेरने का सामर्थ होता है और जब बात साहित्य की विधाओं की हो तो सबसे स्पष्ट रूखसार कहानी विधा को माना जा सकता है क्योकि दर्पण की स्पष्टता दर्पण का मूल्य तय करती है ऐसे मे कहानी विद्यारूपी रूखसार, दर्पण की इस खूबी में चार चांद लगा देता है।

Copyright©authors